

१२८८।

०

॥ श्रीरामविजयलक्ष्मीविकासमाधाय प्रसादः ॥



Joint Project of the Rajawadi Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Publisher, Mumbai.

(१)

श्रीराम ॥
१९॥

॥ श्रीमाहगणाद्यिपतयेनमः ॥ रघुनाथकृत्तव्यलिङ्गस्ता ॥ परिस्तांजंलः कर्णित्कृत्ता स ॥ सहुलिजाठवी
 सरास ॥ मन्जालेंरामसय ॥ ३ ॥ रघुविरभीहसाविष्टो ॥ शोधावयाधविलेमानस ॥ तेहोउनिरञ्जयवि
 शोष ॥ मन्जालेंरामसय ॥ ४ ॥ बुद्धिधाविलिवेहसन ॥ गणावयाजगद्याच्युण ॥ तवतेबोधरपृष्ठ
 उन ॥ रामसयजाहन्तो ॥ ५ ॥ तेऽनित्यान्ताभावद् ॥ धर्मिवरिवर्णावलयोध्याद्यि ॥ ॥ तेऽनित्य
 चपहोइनिवित्तोष ॥ शामसयजाहन्तो ॥ ६ ॥ कृत्तव्यलिङ्गहुकृत्ता ॥ शोवेनरामकृष्णाद्यित्तासा ॥ विजय
 ८ ॥ तोद्भवानिंहेहुडाभासावर ॥ निराकारहे ॥ ७ ॥ ८ ॥ औद्धतांरघुनाथकृत्तव्य ॥ अवणहोउ
 निगेत्तन्तिल ॥ तचाभानंहमयहोत ॥ ईलरुद्धाव ॥ तेनियो ॥ ९ ॥ रघुविरपाहुवयावेक्षोवेक्षिं ॥
 हेचहुनयत्तलिभाक्षि ॥ रसनाभानिंहेनत्तालगिलि ॥ रघुनाथकृत्तवर्णविवय ॥ १० ॥ रघुनाथकृ
 त्तर्णिचालुमोह ॥ शोवावयाद्याणजात्तमिलेह ॥ यवंसर्वईद्रियहृद्द ॥ रघुनाथिलिनजाहिं ॥ ११ ॥
 वक्तालणहृद्दवियात ॥ डिक्किंजाम्यजालबहुत ॥ रघुपतिलियुणवाणित ॥ त्रिलानहृदरानियो ॥ १२ ॥

॥ओगार्द्धा॥

(2A)

ओतेन्नपातिजामुच्चवणा। दशर्ष्टिद्रियामाजिवन्या। पुढेबोलकथानुसंधाना। युध्यकांडसुस्थेताप्ता
सताविसावेजाष्याईक्षन। रघोलमेवधिलाकुम्भकर्ण। उद्दिघजालासवण। तोंविरसाहजणउठि
ले। ११। माहापारश्वहजापिनाहर। देवांतक्षरांतक्षविशिर। अनिकायामंदोहरपुत्र। इत्तजि
ताचक्षनेष्टबंधु। १२। घुर्णनयांच्यातुरासवना। सगित्तलिलेवणांगण। रणवाद्येष्टवणाणिति
नाव। डोक्तीनविट्ठपजे। १३। माहापारश्वहजापिनाहर। न। गहरनिघोलसाहिजण। तोंसक्षिरयोवरि
जापुन। विरटक्रिलिपिधानि। ४। डोक्तीनविट्ठपित्राकुव। मनिविरोलसाहिजण। तोंक्षिरविशि
नावरपुर्ण। वेगपातलेवणांगण। १५। देवता त्रोक्तमारा। स्मररिमित्रोच्छितेविरा। घेऊनि
पूर्वतत्त्ववर। समरगणिमिसक्ते। १६। राहत्तोनिभस्त्रमंजर। वक्त्रेच्छिवदारितवावर। मह
घटवतफोडितशिर। किञ्चुगगेफक्कुर्णकेन। १७। जनिवारक्षपिचामान। हायेमाचारलेअसुर।
तवलोवानरांतक्षराजपुत्र। लुरंगातदघाविलला। १८। तोलुरगमुम्भशामहर्ण। क्रिहिरार्थनि

प्रीराम। ॥१३॥

(३)

चेहहयरत्न। किंमुसेतघारुनेलदक्षिण। तुरगमवेतिलातो। १३। किंद्याकुविच्चातोयधीडला। किंउच
श्वाबंधुलात्त। सुपर्णाहुनिवेगलागक। जैसाप्रवेशलापरदीक्ष। १४। जैशिप्रकर्द्दिविदुतता। ते
शिव्वरिंझकेअविक्षता। अलानचक्रवतीप्रियरत्न। दीष्टिनहिसेक्राण्होत्तेष्ट। अश्वरक्ष्यात्रिपाणि।
दिन्दिमिकालेयेक्षर्त्ति। तदन्नंतरेत्तेसमर्ज्ञ। रव्यानिर्वेलिच्छुत। १५। अठरात्तहवज्जरभ्रणि। नरांतके
मारित्वेलेहृणि। किंचिन्मोऽनेतदेवद्वमपाणि। उग्रद्वन्नलाहिले। १६। अनिवारनरांतकाचामार। वा
ब्जराहातिसमोर। सहस्रांचसहस्र। घायस्तस्सपत्तिन। १७। धांवेडोसाहुतांत। तैसापेटलावाक्षिसु। १८। इय।
ल। किंतरवरिखक्षमांत। विद्युत्तपतियति। तैसाअंगद्वरेवेन्जाता। क्रठोरपणिप्रहरहिथला। १९॥
नरातकाचाजतजाला। अश्वसहितनेहृक्षि। २०। नरांलहुपउलांचौधेजय। अंगदावीरधाविन्दलेवहुक्षु
डुन। माहापारश्वहमोहोहरहात्त। हेवांतक्षमाणित्रिसिरा। २१। हुतिपवितहोवेतुन। उमावहलावाडि
नंहन। चौधाक्षियुध्यक्षरितांपुण। अंगदसंहटिपतियेला। २२। धाविलपतिरस्वेतिधेजण। तशमनक्षा
युनंहन। नेकेपवेलटाकुन। मोहोहररणिपतियेला। २३। हेवांतक्षासमिपहुक्षुमंत। येतनितयाप्रलिबोन्ता।

३४

तुम्हेवांतकनरंतकनामस्त्वा ॥ क्रोध्यामुठेविलेण ॥ निर्वाशिन्यानावरीतकांता ॥ किंज्यनानावन्नहस्यारि
 वर्था ॥ किंजावजात्वंभाहिस्य ॥ नेबांधत्तिरपीड्येला ॥ ३१ ॥ जंबुकीद्विद्वेष्वनांपकें ॥ द्विशिकेंशरिनावठेविलेण ॥
 देविनेत्रकेचिनाले ॥ क्रमकनेत्रनामलयाप्रति ॥ ३२ ॥ ज्ञामेंगकानावसागिरया ॥ किंज्युस्यानावजारिण
 प्रति ॥ किवार्थविधवेत्रिनिष्ठिति ॥ जन्मसादित्रेनसाजे ॥ ३३ ॥ कोराज्ञमागतांनमिक्षणमात्यासद्वनवठे
 विलेपुर्ण ॥ द्विरस्त्रियुचाजानांप्राण ॥ लक्ष्मीहिकेणिनेत्रात् ॥ ३४ ॥ लजारस्त्रकानावपेडित ॥ किंकाष्वाहकानावन्न
 पवाया ॥ हीरिद्वियारिनावप्राय ॥ कुपेरात्वेजाहोते ॥ ३५ ॥ ज्ञेसेज्ञागीकिंचेस्तन ॥ किंमुखमंडणवीधिरक्षण ॥
 निर्गर्भाष्टचेविशाळनयन ॥ तैसेचजापनामहु ॥ ३६ ॥ राजाभाशिसिकासन ॥ किंश्वानस्यभृष्टजामन ॥
 किंहिवांवरंपरिधाका उष्टरशिक्करविलेण ॥ ३७ ॥ कनकहस्यावयासस्यणति ॥ किंचर्मकथिन्चालोहहस्ति ॥ क्रि
 पस्यानावसारद्वाजस्यणति ॥ हेवांतकनावठेसेतुङ्गे ॥ ३८ ॥ ज्ञेसेबोलोनिवादुकुमर ॥ हर्द्विद्वेष्वनावताप्रस्त्र
 संपत्तेवांतकाचासेसार ॥ नेत्रिरिरासल्वरधाविकला ॥ ३९ ॥ न्युमेतेविशाळवस्त्रघेवन ॥ त्रित्रिरामारि
 लानलगतांहस्या ॥ द्रुपतेपर्वलघालुन ॥ माहापारश्वहस्तिरिला ॥ ४० ॥ ज्ञेसेअलिकायानेहेष्वन ॥ सारस्यास

श्रीराम।।
॥३।।

(५)

हणेष्वेतिस्थंदन॥ सर्वासमालभक्तन्। रामावरिधविनला॥ ४१॥ सहस्रघोडेआचेरयि॥ अरथास्तहिनादे
पगति॥ रणांगणित्वेतावृति॥ नवलकृपिकीरतिलेकुं॥ ४२॥ अतिकायोंस्तुक्तविरर। ईद्रजिनाभेसाप्रतपि
विर॥ लासमेनबालेपांचवाब्धर। पर्वतहलितेउनियो॥ ४३॥ गवयगवास्तकमुह। इरभजाणियांचवामेह॥ पर्व
तयक्तिसुवध्य। येवर्दीचितेकाळिं॥ ४४॥ असिकारेंसोऽलाकाण॥ पर्वतटीकिलापिष्ठक्तन॥ वरिंस्तिक्तिले
पांचक्तिजय। ओरंबक्तपीडिलधरणीर्वीर॥ ४५॥ विश्वस्तपास्तपुसेरधुनंदन॥ हजाहुक्ताणाचाकोण॥ येसल्ल विजय॥
णहारंवणाचानंदन॥ नामस्तिथानजिलिकाय॥ ४६॥ हुवहुतेलागवा॥ ब्रह्मदेवयसिवरहिधला॥ ४७॥ अव
नीवारपैजात्वा॥ पुनर्धर्थवल्लयेयाच्च। ४७॥ हुतेनावापेपुर्ण॥ तुलित्वउठवेघनुष्यवेउव। किंशठ
वावउनिलजिवन। याचेप्राणदानक्षयाववा॥ ४८॥ कृष्णिलचापस्तिगवसीण॥ तेविनिरालिप्रघेटवासर
भाण॥ किंकुंउनिलमाहाभाण॥ याश्विकेचेतउवफुंक्तिल॥ ४९॥ तेविनविसुमित्रानंदन्। मित्रयस्तियुधक
मेन॥ अवस्थमणेशितजिवन॥ विजईठेईरणांगणो॥ ५०॥ जायचढुनिसत्वर॥ पुढेषावेसुमित्रकुमण॥
लणेभालिकायातुसेक्तर। विटीविनभाजिरारपंथि॥ ५१॥ (तुसेस्तुक्तसुमहेहोकि॥ वेगिठेक्तीरनसमरंगाण॥

आतांलंकेशिफिरोति। कैसाजाइलमाधारा॥५३॥ कुलावच्चियामुख्यंता॥ सांपउलेराहससमस्ता। तुंजरगेला
 स्मिकहरिल॥ कैसाजाइलमाधारा॥५४॥ कोबंपवाघालोनि॥ वेठोनिजाणिलंरणांगणि॥ भुजंगचेक्केलुनि॥
 मस्पदिकोरिजाईल॥५५॥ अलिकायाल्पन्तेसमई॥ तुंजीवीरलगताबापुलेर्वाई॥ माहाबाघाचंसांगपाहि॥
 जंहुडकेस्थारियें॥५६॥ नटनपजालोवेवारन्॥ पारयाचिकोणिनमानितिजना॥ क्रिकिरवेराख्यदाविपुण॥
 ऊंसारित्यागनकेचि॥५७॥ प्रालङ्घेऊणिलेलवलोहि॥ लजालांकोणाचेपाई॥ यमपुरिस्त्वसर्वहि॥ वरस्तिक
 रालनिष्वयो॥५८॥ स्वाँतुभवेपित्रुगण॥ काय्॥ नैवसोन॥ समाचारजाघावयालाहुना॥ तुलासपा
 र्तुयेकाविं॥५९॥ औसेंबालेकावावेलवचना॥ सौमन्जगेहानुसावयान॥ सांसाचिंजालांमाझेवाण॥ तुम्हे
 प्राणठारितेजे॥६०॥ लोंजलिकायेलाटिलास्यद्वन॥ लोरेलस्वापनमंडितपुण॥ मिवकरसंरव्याजापा॥ श्वेतवर्णवा
 तेजुंसुले॥६१॥ लक्ष्मणेक्षेत्रिलपांचवाण॥ क्रिंपांचवपक्षनिवाज्ञामेघातुना॥ लंकेहापुवेहेस्वेवा॥ योडिग
 वाणलेक्काळिं॥६२॥ त्वापापासुकिसुटलांवाण॥ तेणपंचशरटकिलवुडेन॥ मगसेडिसहस्रवाण॥ सुमित्रांह
 नतेकाविं॥६३॥ परमचयपक्षतिकाय॥ तिलुक्केवारनोडुनिलवलाह्न्या॥ वक्ष्यमेघवतगर्जोनियां॥ सहस्र

॥१४॥

5

वाणसोउले॥४३॥ मगलहर्षाचेलस्त्रिया। सेतुनमीमवानंदन। किंबोणात्त्रप्रज्ञव्य। वर्षतजसेलेकामिं॥४४॥
लेयोगजमस्तद्विदारता। मुकेलचिगराहाता। शिरेजङ्गुतलुटता। पुरवाहातजमुर्ध्यात्त्वा॥४५॥ तेथेहस्त्राचेलाम
छेवेसन। माहात्म्यजातिवाहान। किराचेहत्त्वाविरातेपुण। तेकफलिगाईंगर्डि॥४६॥ विरांचेहंतविरवरल
बहुत। तेखवाकुतेयेभसंरव्याल। रवेटेकेविरतरता। तेष्विकुर्मिजाणावो॥४७॥ अनेकगजशुआवाहाति। तेष्वि
नोडिसावजेंतवृपति। असोहेसोमित्रेकेलिरक्षाति॥४८॥ नक्षात्रितिवाक्षर॥४८॥ बहुतभस्त्रेवानाशखें॥सोम॥। विजय
त्राविरलेक्षपुत्रो॥ टाक्किलिपरिसोमित्रो॥४९॥ योहुनियात् योहुनियात्॥४९॥ मगसेतिमित्रकाठिलेहव्याण। मुखिं ॥४९॥
ब्रह्मस्त्रस्थपिलेपुर्ण। कुम्भात्तिविजुसमान। आः पास नेसुटला॥५०॥ निमिष्यनलगतांबालासत्त्वर॥५०॥ छेहि
लेभातिकायात्तिरा। जोलायक्कम्बिजयजयक्करा। भूरवरवर्षति॥५१॥ बहुसालजाटिलेहक। लंकेतप्र
वेशबद्यात्ता। रावणापुढेंसक्कर। समाचारसागरिता॥५२॥ सिंहसनाहुनिरावण। रवोलेपडलामुखायेउ
न। मगर्द्दिंडितेंधावोन। साक्षरनवैसविला॥५३॥ द्युणेभास्त्रिसहिनिधानेंगोल। पुढापरतेनिनाहींहरिव
ल्लि। अतिकायासरिरवाबद्य। पाविराखातुसागेला॥५४॥ इंडिंडिंस्येणरावणप्रति। त्रिया। रतेनचुक्रे क्ते
अंति। जातामियुष्माशिनिच्छिति। जाईविशतुहृष्यार्थ॥५५॥ त्यातुरंगदव्यजडीर। रणमंडवालाइकिरि॥

(5A)

दौबदुर्गलेऽवसीरिं॥ जापणामोंवलेंदन्नियेतें॥ ७३॥ रक्षेंद्रतनियांखान॥ रक्षवर्णवस्त्रेवेसोन॥ विस्मितहसमि
धाखाणुन॥ सर्वभृथान्येसंयुक्॥ ७४॥ रथमंजकेहुवव॥ भातुनिनिधालदिवस्यहन॥ धनुष्ठलुनिरजस्त्रे
पुर्णा॥ सारथिब्रह्मासमवेत्ता॥ ७५॥ त्यारथिद्वेसोनिज्ञडवशिगमेवाजात्गेवाशकामि॥ दुर्धरशरतेऽवसीरिं॥
वर्षताजालाकपिवीरतो॥ ७६॥ लेवाणनकीतसंपुण॥ तादिनांचाप्रज्ञव्य॥ शिरेजाणिकस्त्वरण॥ कपित्वि
लुटतितटतटो॥ ७७॥ कोद्यानुकृतिवल्लरभया॥ पउवात्तहोउनिगतःप्राण॥ त्रिवेदगेलेहउपोन॥ लेखना
ठितयातें॥ ७८॥ येवपकावयाजोंजाति॥ ताक्षांस्त्रवर्णवित्तिःप्राण॥ रामसौमित्रलटस्तपाहति॥ जगिजा
हवलिसायक॥ ७९॥ धनुष्ठलित्विंगर्भोनि॥ राम-पर्पाइलमेहनि॥ लिकवतास्त्वापयाणि॥ रात्रुचि
करणिविशेषदावो॥ ८०॥ शतवणिईडीतें॥ एवोक्तलरामसौमित्रतें॥ पुराणसंख्यावाणिष्ठर्वजातें॥ विष्टु
निष्टुमिवीरपातिले॥ ८१॥ भणिवास्त्रसंख्यावाणिं॥ गंधमाहनपातिलाधरणि॥ रविकृकविरसंख्यारणि॥
त्रैपत्तमेहपातिले॥ ८२॥ चंद्रकृकासंख्यालेकानहा॥ सागरसंख्यातस्थपात्र॥ स्त्रेहमुखसंख्यानित्र॥
प्रेलवलपातिले॥ ८३॥ तत्त्वार्थदिवस्यबाणि॥ अंगद्वयाडिलासमरंगीणा॥ गवयगवाहशरमनिन्द्र॥ संवत्स

अश्विनीमा ॥
११५॥

(6)

रसुंरव्यातयांशे॥४७॥ जीणिक्रक्षकासंस्वादाण। रिविलार्द्येमुखपवक्त्वोचन। विद्यासंरव्यासायक
पुष्टे॥ सुखणाविद्यातले॥४८॥ रद्वनेत्रसंरव्याहर॥ रिविलेगजेक्रमित्वाक्षरा। हेमकुटगौरमुखविरा। द्या
विद्युगसंरव्यादाक्षिले॥४९॥ सुमुखदुर्मुखजापिमुख॥ वीरीहशासंरव्यादाक्षिसायक॥ वरकुडवाक्षरजि
सरव्य॥ सहस्रसंरव्यास्त्रिक्षिते॥५०॥ अेसक्षरनिडदत्तिता। खालेउत्तरलात्विरता। जगवाच्चवाजाविता॥
लेक्रमाजिप्रवेशला॥५१॥ परमहर्षयुक्तरावण॥ पुत्रस्तृत्यालिंगन॥ ब्रह्ममासान्तापगहन॥ हुजक्षिर
तांपुत्रराया॥५२॥ असोवाज्ञरपउलेसर्व॥ परितु लेक्रमाजिवा। विस्मिष्ठणहनुमंतबव्यार्थवा। प्रिय
प्राणराघवाचे॥५३॥ दोधेअल्पलभानवहन॥ क्रीरलिसहन॥ श्रणमिकेसक्रिक्षकरिण॥ जोतीवि
चारकोणकरवा॥५४॥ अस्तागेलाचासरमणि॥ अवतालक्षणोररजनि। मगचुजापाजकेनितेहणि॥
रणसाधुंनिधाले॥५५॥ माहरहस्यउनक्षिले॥ लेविगईंठाईविरपडिले॥ रणवहुतेवेढे॥ दोधेजणजवलो
क्रिति॥५६॥ तवलोमाहाविरजांचुवंता॥ पउलाजसेजारंवक्तता॥ मगतयशिसांवरनिहनुमंता। वेसविता
जाहला॥५७॥ जांचुवंतबोलेहुकुचवचना॥ अरेयाचराचरन्तनिजप्राण॥ तोसुरिवजाइक्रिरचुनंहन॥ अनुजास
गया॥

उरुकुदोसांगेविभिषण॥ नीचेहितपृष्ठमलहुमण॥ यत्तिपरिसक्रैवौव्या॥ भुमिवरिपृष्ठलेजरे॥ १३॥ मर
 बोलेरहपाक्ष॥ जरिकेणिभणिलड्राणाच्छ॥ नीरवद्विन्यावासेसकृव॥ वित्ताताउठलि॥ १४॥ विस्तिम
 आस्तिहनुमंता॥ उगवलानसताद्विनमण॥ औषधिभाण॥ आवेस्तरनि॥ औसेजेहतांलेसण॥ मरतामज
 ओवेशला॥ १॥ विभिषणशिहनुमंता॥ सांगेहाउनिसद्विता॥ बोरेजलनक्करिरुद्धुबाध॥ सौभित्रासहितजि
 वेंशि॥ २॥ हिरसागरत्यापैरपरिं॥ आक्रोहियोन्नद्विरा॥ मरतिस्मणवितियेप्रहीरा॥ औषधिकेगेमणि
 तो॥ ३॥ औसेबोलोनिहनुमंता॥ आकाशापंथउडापकरा॥ हिरण्यशब्दिलुरुद्धुबाध॥ इकिहताहैड़ा॥ ४॥
 चयक्षपणिद्युचरण॥ उडाणावरिघेउडाण॥ ५॥ तरविधतिसुपर्ण॥ वेङ्गठिहुनिजातसे॥ ५॥ किंवहु
 निमानससरोवरा॥ मरक्ष्येपावेसस्तरा॥ यत्तिपरिखंजनिचाकुमरा॥ सत्पदिपैवोतांडि॥ ६॥ सत्पस्मु
 दवोलांडुना॥ दोणाचक्काजवक्षियेउन॥ उनक्कजाझोकहारण॥ उआगक्कातेकाकिं॥ ७॥ अगस्तिसगरा
 चेलिरि॥ श्रिविक्रमवक्षिचेदारि॥ किंयद्विपतिचेजांडारि॥ ८॥ किंलरजवक्षियेउन॥

॥श्रीराम॥ उआगके कुरवरपणि॥ किंनिधानापस्त्रिप्रतिकृतनि॥ साधकउभागकला॥ ॥।।।

॥५॥

द्रोणाचकशिवविता॥ शृणुपरोपकारिपर्वता॥ पुण्यसपनांहसि॥ ॥६॥ तुसेंकरितांचिस्मरणा॥ सकरोग
जातिविलक्षन॥ लरिशरजाठिरामलक्ष्मण॥ ईडिलेणगिलो॥ ॥७॥ लरिदुलिबद्वातासत्य॥ त्रिमुवना
मजियेयार्था॥ किंतिनेकोनिधांवत॥ मियाचक्षयेन्जालो॥ ॥८॥ जेष्यधिदुर्वनिर्मिता॥ मजबोठवावेताका
ठ॥ तोप्रतहस्तुर्निमंतझेन्म॥ बोलताजालकपित्र॥ ॥९॥ शृणुमर्कदाआलाशिक्तुना॥ कैचारामक्त्वालक्षु॥ विजय॥
मण॥ देवांसजोषधिदुर्लेखजाण॥ तुजकेडुनिङ्गलहान॥ ॥१०॥ धरेनिमाजाश्रय॥ मर्कदालुंयेष्यराहें॥ ॥११॥
यवरितराघवप्रिये॥ कैयबोलताजालाला॥ ॥१२॥ शृणुगाजाणहद्यमंहमतिहिणा॥ कार्यकार्यतुजताए
ना। नजाणताहद्दृपुण॥ रवकैसावदतोहित॥ तद्वावयसासकायजावरा॥ मद्यापियशिनसेलत्वकिमा
रा॥ निर्दयाशिधर्मशास्त्र॥ सारासारसमजेना॥ ॥१३॥ अनुष्टाशिकैचिह्या॥ हिंसकाशिकैचिमाया॥ उपर
लिपैश्चुव्यवहियाँ॥ ब्रह्मकौकेनकैचित्पद॥ कृपणासनवित्तर्मा॥ याराशिनावउसकर्म॥ निंकाशिनावउप्रेम॥
अजनमार्गकहानि॥ ॥१४॥

लैसालुंजेलंनिष्टुपा॥राममजननेषीषामरा॥लुजनलागताह्यणमात्रा॥उच्चलुगिरेइबलंद्रेशि॥१३०॥
 किर्तननावेउभुनप्रेता॥हुधनावेनवज्वरिता॥ट्वाठशितलता॥तपानुष्टननावेते॥१३१॥विशाखपुष्ट
 ऋद्धनि॥दोणाचेल्वांधिलाबावकेनि॥वेळेंचुपडनिमुड्हुनि॥वेउनियांचालिला॥१३२॥उगवल्मिजि
 संरथसोहामिनि॥लैसापर्वतहिसेदुननि॥किंकरतकिरुवितरणि॥हुमंतविरजाहसे॥१३३॥किंसुधा
 रसधट्टेतास्युपर्ण॥किंलिकाकमबुंचालितापुण॥किंकरतकिरुविचलुना॥इर्वमप्रायधारियेता॥१३४॥किंकर
 केताटदोणाचेल॥वीक्षिलाचवालिसोजव्छ॥पाजके निचालुवेवाळुयेतरामोते॥१३५॥च्यतुर्थप्रहीरं
 ब्राह्मवसुहुंर्नि॥सुवेदेषीआलामानाति॥तननाडुगत गर्पत॥सामोराधोवजानेहे॥१३६॥लैसुट्टाशितक
 प्रमंडना॥चालिलावीक्षिचसुवास्यवेउग॥त्यावालस्यवेस्त्रामलसुमण॥सेनसीहिलउठिले॥१३७॥रजनिसंपृतो
 पुण॥किणीसीहितउगवेमानु॥लैसेनरामठसुमण॥सेनसीहितउठिले॥१३८॥कोणाचेलचुवास्त्राचार॥घा
 यनहिसेजनुमात्रा॥जसोदोणाचेलवायुपुत्र॥वेउनियाउउत्रा॥१३९॥प्लिकाकंदुवेवेवेवाळ॥लैसापर्वतस्येलि

ग्रीराम॥
॥५॥

(४)

विशाका पुर्वस्थ किंठु निता त्काक। सुवेदोशपातता ॥३०॥ देवां सकु वै से सचिकांत। तैसकि पिवै शिलै वै से रघुनाथ॥
सद्गृहित होउ निहतु मंता। रघुक्वरणि लागला ॥३१॥ जालायेक चिल्य भजय कार। प्रेमर सेंदार कार रघुविर। हहर्इ
धरिलावायु कुमर। सोनयो उर्स वर्षा ॥३२॥ किंडु जाकं गिल यंत्रु पुत्र। किंसंजि विजि सा
च्छिनां कृचर्प वित्रा। न च स्पति ने बावं गिला ॥३३॥ हुन में तरं गिल वहन। स्पष्ट हृष्णा कुरवा किर रघुनंहन। अव्यव
व्यतो चिदिना। स्वामिगौरलहि लेगढ़ा। श्रीरामस्तु या माता सी। तुं सर्वत्वं प्राण दाना कुरेति॥३४॥ सरविकाहि जो आनि॥ विजर्इ॥
शि॥। पर्वत तु बोझणि ला ॥३५॥ बोवहि होतां वधु आसुत। जनन ध्यावो न जो धायि आणित। बारेत सेंके लै जी श्रीहत॥
प्रलाप ज़ुलन वर्ण वै ॥३६॥ जैसे बोलता रघुनंहन। सकु चलि धन्य अव्य॥ स्वामिगौरवा पुढ़पुर्ण असुधार
सतु छैपे ॥३७॥ सुयिवा हुपि धांवति। हुनु मंता रिजाकं गिला। मगवालरां द्वित्यणे किंसुहा पौता॥ याउ परिजा
य पाहता ॥३८॥ जालां चलंके वीरचठोना। सकु चलि सहना द्विलावज गन॥ लोंज द्वाहरा पद्मवालर रघुना। न कीनिया
तालि धारि क्ला ॥३९॥ गगन चुंबित सैल कोष्ठे। क्रपि निचु उयापाज किंबा नैट। किंरामभवानि चेह्विदा। गोंध छधालि तिरपांगी॥
॥५८॥

(8A)

चुरवाद्येननिसमय।।मुकुःकोरंगाजनितिभवर।।जयजयरशक्रधुविर।।हणोनिधविलसर्वहि।।४९।।लंकादुर्गवो
 लांडुन।।ओंतप्रवेशलेवाल्लरगण।।तोंजलुनसुट्टलप्रभंजबा।।चुउयालविभायक्सरें।।४३।।वायुचंभजुलज्जोडा।
 आक्रान्तपथिंजातिजाका।।लंकेमजिहात्तल्लेष्ट।।पवतिस्तक्कलोक्नकां।।४४।।युरज्जुलदाट्वासे।।तेयेन्नो
 णास्त्रोणिबहिस्य।।अनिज्ञागाधांविजावेश।।लेक्कसर्वयासावया।।४५।।कोद्याविध्येत्तज्जति।।राष्ट्रस्यस्त्रिया
 आङ्गवति।।जाओआविउमेनपूर्णाति।।चुउयावेशनिवल्ल।।४६।।त्रिएदेवकतांरजनिवर।।चुउयालाईनिमीजित
 वाल्लर।।तोहिशामुरक्संरव्यासमविर।।दुलस्त्वर्ज।।४७।।हवुमलेज्ञाणोनिद्रोणाच्चल।।संजिवकेलेविस्स
 कठ।।लंकेनप्रवेशलेविरसबक।।जाडिलिंसक्कम्।।४८।।अजंचजंचकोयन।।क्षिपहिमोणिनास्त्रराजवंह
 न।।कुंभनिकुंभाप्रतिरावण।।हणेधांवरेस्त्वर।।४९।।त्रिइधक्कनिसेजाभयर।।कुंभनिकुंभनिधालेस्त्वर।।
 धालेनियंप्रज्ञंव्यास्त्र।।अग्नसमयविज्ञविका।।५०।।डैशिंकठिवेरसांतुनिजाप्तिप्राण।।तेसेरंकेबोहरजाल
 क्षपिगण।।रणभुमिसमिक्तोन।।युध्यालग्निसरसावले।।५१।।आलाहेवोनेनामार।।सेनामुद्रिवंडोलावाक्षिपुञ्ज।।

श्रीगम ॥
११३ ॥

७

तों पर्वत घेउनि सबर ॥ क्रोध नावीर धावि बल लाग ॥ ५३ ॥ बवे पर्वत लिङ्गाद कुण ॥ रथा सहित नुर्ण जाल को अन ॥ लों जंघ
प्रजंघ विस पालि हात पा ॥ ज्ञाले घावे नि चंग दाव मि ॥ ५४ ॥ अगहे विशाक्ष हस्त उं पडुनि ॥ हो घो झो उनि पाइ लेघरणि ॥
मग विस पाहे निज बाणि ॥ विर बहुत रवी क्यो ले ॥ ५५ ॥ लों मे द्य पर्वत घेउनि धा विकला ॥ अक्षमाल विस पालि व
रेदाकिला ॥ विस पाह प्राणि शिमुक्त ला ॥ शरमे निला श्रेणि नास्त ॥ ५६ ॥ मग ले कुम अद्धर्ण चानं हन ॥ कुंभ पुठे आ
लाध वो न ॥ धनुष्ये वो ढुनि जाहर्ण ॥ नव बाण से ॥ ५७ ॥ त्यानुवर शर प्रहुरे करनि ॥ मैह क्षपि रिवि किला रणि ॥ रविजय ॥
शर भवि डिल दाहु बाणि ॥ मुर्छिल अरणि पीडुला ॥ ५८ ॥ अविलावा बिसुता ॥ घेउनि याविशाक्ष पवता ॥ त्या
च कुंभे रिवि किला हस्त ॥ अन वासहि तर पन्नु मि ॥ ५९ ॥ कटि पीडिल बहुत ॥ जंग दहि तरहि कान्ट से ॥ वाञ्जि रि
हो छ ने लिल बिता ॥ रथ वापा दिने कांके ॥ ६० ॥ अरोक्ति मिलु कुजराचिआग क्षिहा ॥ जावे दो चपे दमुग नाव क ॥ दाचि
परीक्षि स्कंह नाय क ॥ कुंभाचे हर्द जाद कला ॥ ६१ ॥ कुंभाचे ज्ञाप देन भेनि होन ॥ नेउनि कुटके क्लेपुणि ॥ मग महि
युधा सहो देजण ॥ भर्वले लेत भोक्ति ॥ ६२ ॥ येह मुहुर्न पर्यंत ॥ हो घामत्तम युधहोत ॥ अर्क ले हर्द मुहुर्न बान ॥ कुंभादि बोक्ति हर्दल ॥ ६३ ॥

१४

हृष्यजालेंपरमचुर्ण। कुंभाचालेषंगेताप्राण। तवेतोनिकुंभज्जोवेशंहृत्तन। सुग्रिवाकीरधाविन्नला। धूरपतेंपर्वे
 तस्वक्षुर्वच्छुन। धाविलाशिनाशोकहारण। भवक्षदिघज्जाप्तिरक्षउन। तोनिकुंभेंचुर्णकेलावणि। धृष्टलेषे
 हृष्टमंतपरमस्त्रास्त्रका। विशाक्षतस्त्रावरिदाक्षिला। तोनिकुंभेंतोषिता। धृष्टानिकुंभेपरिद्युत
 चलाहिं। वेउनिमासलिस्त्राडिहर्द्दि। पश्चमत्रसुर्घनालेसमई। हृष्टनुमंताशिलालिहो। धृष्टा। सदेंचिद्यांवेजांजनि
 षाबाक्ष। शालशंगत्वात्परिलाभंचक। कुंभविरियाक्षिलावकाक्ष। चुर्णज्जालातयातीक्षं। धृष्टा। धायाकपक्षतिलेख
 आंता। रावणशिक्षारतिश्चुत। भैक्षवांचिंताक्षालज्जनाय। शासोधासदक्षितस्ये। धृष्ट। मगविंशनिनेत्रीतिधेवि
 रापरमप्रवापिसमरिद्य। रक्षाहिक्षाक्षाहिक्षरु। मराह्यालिसरापै। धृष्ट। निषांसम्मणेहरावहन। हुहिंजावां
 माजवारण। ताल्काकरधारठेहेउन। सेनेसीहिनानिधाले। धृष्ट। रणलुरेगर्जनिअपार। रणमंडकशियावलेसलिरा
 नोराक्षद्वेउनिवान्नर। उगवलेयेक्षहांचि। धृष्ट। येरयेरांपाचारिता। उसेनेंद्वेईमणोनिमित्ति। असुरांचिंपो
 देँफोउति। वान्नरनरेक्षालेनियां। धृष्ट। कुंलज्जासन्नतापरिच। असुरवास्त्रेंदरक्षितिसवेण। तेषेविहारनिजांग।

॥श्रीराम॥
॥१३॥

(१०)

कथिपउतिसमरंगणा ॥ ७२ ॥ कर्पिकेश्वरेष्वाग्नेण ॥ असुरभारमागेंलेटिले ॥ मकराहोहेवेनिलेवेष्ठे ॥ बायवर्षत
 घटिविनता ॥ ७३ ॥ प्रह्लाद्यापाराजयारा ॥ तेसामकुराहस्वप्नेशरा ॥ कोच्चानुजेटिजंगलेराहस्त ॥ पाहेरघुविरदुरेप्पिन
 वा ॥ ७४ ॥ मानदुकविद्वितारमणा ॥ ह्लयोभलाविरहारणधिणा ॥ कोहंडपद्धनिस्वयेंजापणा ॥ जगद्युठिला ॥ ७५ ॥
 कोहंडवेटिलानेहाणि ॥ इष्टण्टकारिभाहुइविक्षिणि ॥ येहुच्चवाणलेहाणि ॥ इशकंठरिपुनेसेतिला ॥ ७६ ॥ मकराहा
 चेवाणजाहा ॥ येहुच्चशरेंठेहेताकाका ॥ जेविउगवनास्त्रमुडका ॥ मगणेंसर्वमावक्षति ॥ ७७ ॥ किंयेक्कठतावेना
 येहा ॥ असंरभसंकरिदंहसुका ॥ किंसुखांचेवालतरवा ॥ नवहजाठविनठे ॥ ७८ ॥ किंयेकविष्णुनमेंक्षति ॥ ॥ विजय॥
 असंरभहुीरेलंजातिजबोनि ॥ किंचेततायेहज्जरा ॥ अकंक्षनेंहंधरोति ॥ ७९ ॥ किंमुखवाचेवाग्नाकसमस्ता ॥
 येहुराबेउत्तिविपंडिता ॥ येहुस्मिंकनाहेंगजहारिता ॥ युतिगतःप्राणहोउनियां ॥ का ॥ किंहृद्दिप्रधटतांबोध्या ॥
 सहपरिवारेकामक्षेत्रा ॥ किंप्रत्ययायेतांत्रियानंदा ॥ ह्लुद्रनिंदासर्वविरति ॥ ८१ ॥ त्वोंरघुविराग्नायेहुबाणसबका ॥
 तोडिवेंमकराहस्तिराजाका ॥ मगत्याशिमुकिचावयताकाका ॥ दिव्यरारक्षिला ॥ ८२ ॥ मकराहस्ताकंठलहुनि ॥

त्रारच्छलिलजैसासुपर्णा ॥ क्षणमोत्रं कंरनाठ्छेहुना ॥ भोक्तावापंथं उडविले ॥ १३ ॥ लोऽग्नेणिताहें लाप्णिशरहें ॥
 लैहिपाचरिकौकम्बादें ॥ जोसर्वालासर्वसाहा ॥ विशपाह्यायसदां ॥ १४ ॥ तवजसुरधां वलवलोहं ॥ हृषि
 लितुजसर्वकावकैचाडय ॥ अद्गस्मालकाढलिनवायें ॥ मन्त्रराह्यलुंवामारिला ॥ १५ ॥ औसेवोलेनिद्वेषजण ॥
 सोउतिरामावीरप्रचंउबाण ॥ जैसेमुगंद्रावीयितना ॥ मंत्रिलउडाणमार्जीरा ॥ १६ ॥ किंसज्ञानपूर्तितापुटों ॥ बो
 लावयालिमहामुठों ॥ किंजंबुद्धापुलेपवो ॥ वाजातुदेहाद्वितु ॥ १७ ॥ किंउषरानित्रिदेवायोन ॥ गंधर्वो
 पुद्मादितेंगायन ॥ तैसेराह्यसंधान ॥ रामापुटेराव ॥ १८ ॥ वैद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युति
 प्रकृयवपक्षजैशाध्योरा ॥ तैसेहोनशरकाठिले ॥ १९ ॥ वैद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युतिविद्युति
 ठनाळ्छदुन ॥ निराकमार्गपनेलिं ॥ २० ॥ कवलारावणाशसमाचारा ॥ परत्रयावलेत्रयजसुरा ॥ लेकाहक्षिरामा
 विरा ॥ सेनसाहित्यविकला ॥ २१ ॥ होमहृत्तिविरणमंडिकं ॥ त्यात्तुनयेहस्त्यनिवालि ॥ रथावरिवेसेनिलेवेदिं ॥
 गगनमार्गउडला ॥ २२ ॥ कल्यालाउवेसेजा ॥ ईडिलकीसंधान ॥ सर्वावरिटकिलिबाण ॥ वान्नरगणभवाजित ॥ २३ ॥

Joint Project of
Sarawati Mandayani and the Yashoda
Muni Bhawan

॥श्रीराम॥ प्रगलोकधारेवयेतनि॥सांगेजगद्यचियक्षर्णि॥हृषेजंगिरस्त्रेञ्जननि॥ऋत्याच्छेदुनिटाक्षहो॥१४॥ कलजाइक्षे
॥१५॥ नाशकरिसोडिलपैवाणा॥वात्काढरामेमंत्रजपेन॥जंगिरास्त्रसोडिले॥१५॥ तेषेकल्याज्जस्मक्षेलिस्त्रिरा॥जैसाबो
यप्रवेशतांभन्तरि॥दुर्वासनाच्चेवरेत्तरा॥त्रष्णक्षमावेत्तनिया॥१६॥ किंप्रवृत्ततेवास्त्रप्रणि॥तमजावजाय
निरसुनि॥तेषिक्रत्याच्छेदितांयरणि॥हास्त्रजितउत्तरला॥१७॥ रणिप्रवृत्तमानहोनि॥जपारवारसोडिरवाणि॥ ॥वीजया
लोदुरास्ताहेवतांतेष्यणि॥वान्नरसर्वसोम्यत्ता॥१८॥ यवानि पांमहापर्वव॥रागेयविलाभंजनिसुत॥गदाघेतनि ॥१९॥
लोमता॥विजेयणदोलाक्ला॥१९॥ परिद्यहातिंघेत्तुरा॥ यविक्ललक्षोघेक्षतनि॥तेमोहोहेयनेजाक्तोनि॥
अन्वतरिपुठेजाला॥२०॥ शत्त्विधेत्तुनिक्रेवक्ता॥ विक्ललानोटप्रसवान्नरा॥ शरस्यधावेघेत्तुनिक्रका॥ गंधमा
द्वेशक्तिधेत्तलि॥२१॥ ऊंबुवंत्तेत्तन्नवेत्तलधोरा॥ अंगद्वेत्तुप्रिलात्तत्तवरा॥ निक्रेवदिक्षिताघेत्तुनिस्तवरा॥ शक्तरि
वरिद्यविक्लला॥२२॥ नक्षेत्तुच्चलिलिमाहुशिका॥ सुग्यिवपर्वत्तघेत्तविक्लला॥ कुमुदहक्षेत्तुनिपुठेवाला॥
लोहोपाटिशघेत्तनिया॥२३॥ सैमित्रंवापनेठुन॥ यक्षिलेलेक्षमिभवाणा॥ शंभरव्वास्त्रास्त्रण॥ श्वुष्विरेहिटाक्षिले॥२४॥

११

रमलहुमणासहितसकठ॥ कपिहठतेकुक्केलेंविकड॥ पुनर्वार्यकर्त्तगिताकाठ॥ ईङ्गिलतेकुंपरतला॥ ५॥
 ११८
 जयवादेवजीविता॥ लंचेलघवेवोवाक्षजिता॥ पितेयाशिव्वरेनिप्रणिपाला॥ वार्तासमुक्तसंगिनली॥ क्वा॥ रामणा
 ल्पणशक्तजिताशि॥ तुह्यणह्यणाश्वामारिशि॥ ईङ्गानिरह्यांदिसतिबाक्षशि॥ मागुतैसेउठतीता॥ ७॥ वरदीर
 जैसंजठेह्यण॥ मागुतिलंकुरकुटलिमिपसुव॥ याक्षिवाक्षजितप्रतिवचना॥ कायबोवलाजाहला॥ ८॥ ल
 णजातारामलहुमण॥ सनेसाहिलयेइनवहुना॥ नीक्षितराशिवाविना॥ व्रतिज्ञापुर्णहमाशि॥ ९॥ अैशिनौजीर
 वधउगोषि॥ तरितुष्ट्याभास्माक्षिभेदा॥ मापितरास्तोनिउठाउग्य॥ ईङ्गिलचालिला॥ १०॥ मगद्विष्ट्य
 करनिच्छालुरंगहक॥ युध्याचग्लिलाउनावेका॥ जै॥ ११॥ रामपुरसुवक्ता॥ वर्षवक्तविंष्टांवतसे॥ ११॥ तिनवेचसु
 अक्षरनि॥ ईङ्गिलगेलाजयपावोनि॥ मागुनिभालाचोयग्नि॥ रथमेहिनिमाजनवया॥ १२॥ युध्यकाउपरमसु
 रस्मा॥ येधेविशेषमाजेक्षविरस॥ लेचलुरश्रानपरिसोना॥ आसाहरेसावक्तव्या॥ १३॥ रथरगधिरारामचंद्रा॥
 सुवेकाचवियाप्रवापराडा॥ श्रीश्रवरहाजानंदसमुद्रा॥ ब्रह्मानदाजगहुता॥ १४॥ रामविजयप्रथसुंदरा॥
 समलवामिक्कनाटकाधारा॥ यदापरिसोनचलुरा॥ अष्टविंशतिमोश्चायगोडहा॥ २१५॥ ४॥ १५॥ १६॥

(12)

श्रीराम।।
१९६६।।

॥श्रीरामविजय॥ भस्त्रनिरन्तरोऽप्यसमाप्तः॥



"Joint Project of the Rajawade Sanskriti Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratinidhi, Mumbai."

विजय।।
१९६६।।



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com